Vol. 11, Issue-2 (July 2022) pp. 203-210 Sangeet Galaxy e-Journal [ISSN: 2319-9695]
UGC-CARE enlisted & Indexed in the EBSCO International Database of Journals

उत्तराखंड लोक संगीत: गढ़वाल के लोकगीतों में जागर का महत्व

डॉ0 शिवनारायण प्रसाद
विभागाध्यक्ष, संगीत विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुंज, हरिद्वार
अलकेशिका भट्ट
शोधार्थी, संगीत विभाग, देव संस्कृति विश्वविद्यालय, शान्तिकुंज, हरिद्वार
Email - alkeshika@gmail.com

सारांश

उत्तराखण्ड की लोक संस्कृति में गढवाल के अन्तर्गत गाये जाने वाले जागर गीतों के अर्थ पर प्रकाश डालते हुए इसके विविध प्रकारों, इसकी पूर्ण प्रक्रिया का वर्णन करते हुए विशिष्ट रुप से इसके महत्व को यह शोध पत्र उल्लेखित करता है. जागर गीत उत्तराखण्ड के गढवाल तथा कुमाऊँ दोनों ही क्षेत्रों में गाये जाते हैं और इनका इतिहास काफी पुराना है. यहां के लोग स्थानीय देवी-देवताओं को प्रसन्न करने के लिए व अपने दुखों के निवारण के लिए समय-समय पर अपने देवी-देवताओं को याद करते हैं व उनकी पूजा करते हैं, इसी पूजा की विधि को जागर के नाम से भी जाना जाता है. जो एक लोकगीत शैली होने के साथ-साथ देवताओं व भूत प्रेतों को मनुष्य शरीर में जागृत करने की एक पूरी प्रक्रिया है .गढवाल में जागर गीतों के महत्व को यहां के जनमानस के सन्दर्भ में समझने के लिए जागर-प्रक्रिया से प्रत्यक्षतः प्रभावित हुए लोगों के जीवन में जागर के प्रभाव का पूर्ण घटनाक्रम अध्ययन कर उसका विवरण दिया गया है. इस के लिए सम्बन्धित क्षेत्र में जाकर साक्षात्कार व क्षेत्र अध्ययन के माध्यम से यह शोध-कार्य सम्पन्न किया गया है और सम्बन्धित प्रसंग इस शोध-पत्र में समाहित किए गए हैं.

मुख्य शब्द - जागर, गढवाली लोकगीत, उत्तराखण्ड.

1. प्रस्तावना:

संगीत को सार्वभौमिक रुप में आदिकाल से ही मानव सभ्यता का अभिन्न अंग स्वीकारा गया है, जो मनुष्य के सांस्कृतिक पक्ष के साथ उसके विकास व इतिहास को भी प्रतिबिम्बित करता है. इसी संगीत के विविध स्वरुप जन इतिहास में हमें देखने को मिलते हैं जो अपने-अपने क्षेत्र के अनुरुप लोक की जीवन शैली के विविध पक्षों को उजागर करते हैं. इसी प्रकार उतराखण्ड का लोक-संगीत भी अपनी पहाडी संस्कृति की छटा बिखेरने के साथ प्रत्यक्ष रुप से यहाँ के लोक की गाथा कहता है, जो गढवाली एवं कुमाउँनी क्षेत्र की विविधता को स्वयं में समाहित किए हुए है. उत्तराखंड के गढवाल क्षेत्र का लोक-संगीत मुख्यतः जागर, बाद्दी तथा मांगल गीतों का सामूहिक रुप है जिसमें कि जागर मूलतः यहाँ की लोकगाथाओं व लोकगीतों का मिश्रण हैं. जागर के अन्तर्गत कथानकों, देवी-देवताओं व भूत-

प्रेतों का उल्लेख होता है. जागर गीत एक ऐसी प्रक्रिया है जिसमें मनुष्य के शरीर में गीतों के माध्यम से देवताओं को जागृत किया जाता है. इन गीतों को गाने की पूरी प्रक्रिया विशिष्ट होती है तथा इन्हें गाने वाले भी विशेष लोग होते हैं जिन्हें औजी, ढोलीदास इत्यादि नामों से पुकारा जाता है जो पारम्परिक तौर पर इन परिवारों के द्वारा गाये जाते हैं एवं साथ ही जीविकोपार्जन का आधार भी होते हैं. उत्तराखंड राज्य दो भागों में बंटा है जो गढ़वाल मंडल व कुमाऊं मंडल के नाम से जाने जाते हैं तथा आदिकाल में यही क्रमशः केदारखंड और मानसखंड के नाम से पुकारे जाते थे. दोनों ही मंडलों में जागर गीत का गायन होता है और इनमें काफी समानता भी पायी जाती है. दोनों ही क्षेत्रों में जागरों का उपयोग दुःख निवारण के लिए होता है.

2. जागर का अर्थ:

जागर संस्कृत मूलक शुद्ध वैदिक शब्द है, जिसका शाब्दिक अर्थ है जगाना, जागृत करना अथवा उजागर करना. अर्थात् जो व्यक्ति या वस्तु (भौतिक या अभौतिक उर्जा) सुसुप्त अवस्था में हों उन्हें जगाने के लिए गाये जाने वाले विशिष्ट गीत ही जागर कहलाते हैं, सामान्यतया जो छिपा हुआ हो उसे उजागर करने की प्रक्रिया जागर कहलाती है. उत्तराखंड में जागर के अन्तर्गत देवी-देवताओं का गीतों के माध्यम से आवाहन कर उन्हें जागृत किया जाता है. जागर को स्पष्ट करते हुए लिखा भी गया है कि "किसी भी धार्मिक आयोजन के अवसर पर रात्रि में जागकर नृत्यात्मक गायन अथवा मात्र सामूहिक गायन के द्वारा देव-विशेष से सम्बंधित जो गाथाएं गायी जाती हैं उन्हें जागर कहते हैं ("Nanda Jagaron ki samajik evam sanskritik prishthbhumi," 2013, p. xx)[1]. गोविन्द चातक, 1956[2] के अनुसार जागर शब्द की व्युत्पत्ति जागरण से हुयी है और वास्तव में ये गीत रात में जागरण करते हुए देवताओं के नृत्य के व थाली-डमरू या ढोल-दमौउं जैसे वाद्यों के साथ गाये जाते हैं. जनमानस की साधारण भाषा में विशिष्ट प्रयोजन की पूर्ति हेतु जागरण करते हुए विविध देवी-देवताओं का लोक-भाषा में लोक-वाद्यों के साथ नृत्य सहित किया जाने वाला आवाहन ही जागर कहलाता है. जिनके माध्यम से वे जागृत होते हैं और प्रयोजन की पूर्ति में सहायता करते हैं. वहीं उजागर शब्द को केंद्र में रखते हुए डॉ0 नन्द किशोर ढौंडियाल ने कहा है जिन गीतों एवं क्रियाओं का उपयोग जागरणों में देवी देवताओं के सूक्ष्म शरीर को प्रकाश में लाने के लिए किया जाता है वे ही गीत, गाथाएं एवं क्रियाएं जागर कहलाती हैं (Dhaundhiyal, 2018, p. xx)[3]. अपने प्रयोजन के आधार पर जागर के विविध प्रकार होते हैं एवं उनके गायन की प्रक्रिया भी भिन्न हो जाती है.

3. जागर के प्रकार:

गढ़वाली जागरों का प्रारूप पुरानी लोक-कथाओं एवं लोक-गाथाओं से लिया गया है जैसे पांडवों की गाथा, श्री कृष्णलीला, देवी भागवत् पुराण इत्यादि, तथा इन को जागर गीतों का उद्गम माना जाता है. जागर गायकों, पुस्तकीय

स्त्रोतों एवं गढ़वाल के जन-मानस से प्राप्त जानकारी के आधार पर जागर का अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि इन्हें मुख्यतः चार भागों में विभक्त किया जा सकता है जिसमें क्रमशः-

i. देवी-देवताओं के जागर
ii. भूत प्रेत सम्बन्धी जागर
iii. स्थानीय वीर गाथाओं से सम्बंधित जंग
iv. प्रणय मूल व ऋतु संबंधी गाथाएं

i. देवी-देवताओं के जागर - ये जागर विशेषतः देव भावनाओं से सम्बन्धित होते हैं जिनसे अलौकिक आध्यात्मिक शांति का सृजन होता है ये जागर सृष्टि की रचना, आकाश, वायु, पृथ्वी इत्यादि के अस्तित्व की व्याख्या करते हैं. इन जागरों में पंच नाम देवताओं का स्मरण करके उनसे सुख शांति की कामना की जाती है. धार्मिक जागरों में स्थानीय देवी-देवताओं, प्रकृति पूजा, नाग, यक्ष, संध्या, प्रभात, संत-मुनियों के जागर इत्यादि भी सम्मिलित होते हैं.

उदाहरण -

तिन लीने जन्म देवकी का कोख,
देवकी का कोख कंसकोट राज मा.
बैरियों की भूमि, मामा की मथुरा ,
माता तेरी देवकी, पिता वसुदेव
सुण्याला कंसु तुम देवकी का आठवां गर्भ,
होणा कंसु को छै .

(Chataka, 1996, p. xx)[4]

उपरोक्त जागर श्री कृष्ण जन्म की गाथा का वर्णन करता है.

ii. भूत-प्रेत सम्बन्धी जागर - जो व्यक्ति असमय ही अकाल मृत्यु के गर्त में समा जाते हैं व जिनकी इच्छायें अपूर्ण रह जाती हैं, उनकी आत्माओं को अतृप्त माना जाता है तथा उनकी अपूर्ण इच्छाओं की पूर्ति हेतु अथवा उनकी संतुष्टि हेतु उनके आवाहन करने के लिए जो जागर गाये जाते हैं वह इस श्रेणी में आते हैं तथा भूत-प्रेत सम्बन्धी जागर कहलाते हैं. इन जागरों में तंत्र-मंत्र, सैय्यद, मैम्मद, अतृप्त आत्माओं को तृप्त करने से सम्बन्धित जागर समाविष्ट होते हैं.

उदाहरण -

तख मुंडलौं का चौंरा लागिना मर्दों.

तख खुनी की दंढी ब्वगीना मर्दों.
वख स्याल गरुड़ प्वडीना मर्दों.
तख भूत बरात सजीना मर्दों.

(Dhaundiyal, 2018, p. xx)[5]

iii. **स्थानीय वीर गाथाओं से सम्बंधित जागर -** इसके भीतर उन लोक वीरों की गाथाएं आती हैं जिन्होंने अपनी वीरता का प्रदर्शन करते हुए लोक-कल्याण के लिए अपने प्राण त्याग दिए. इनमें प्रसिद्ध हैं माधो सिंह भंडारी, तीलु रौतेंली, भानु भोंपेला, कैंतुरा, कालू भंडारी इत्यादि.

उदाहरण -

तौंकी रघुवंशी घोड़ी छुटीने मरदो.
तौंकी जमा की तैणी टूटीने मरदो.
तौन गंगाजली धागों धरियाली मरदो.
तौन बख्तरी जामों पैर्याले मरदों.

(Dhaundiyal, 2018, p. xx)[6]

4. **प्रणय मूल व ऋतु संबंधी गाथाएं -** इन जागरों के भीतर वे लोक गाथाएं आती हैं जो प्रेम-प्रणय व ऋतुपर्वों से सम्बन्धित होती हैं जिनमें जीतू बगडवाल, मालू राजुला, कृष्ण-गोपी रास जैसी प्रेम गाथाएं तथा बसन्त, चैत्र, वैशाख इत्यादि ऋतुओं के पर्वों की गाथाएं गायी जाती हैं.

उदाहरण -

हे जी बरसु बीती गैन तब.
पंचुला की नौनी राजुली अब रंगीली ,सुघर तरुणी हुवेगे
बुराँसी को सी फूल फूली गए राजुला
रूप की छलार आंख्युं मान वीं का.
ज्वानी भरेणी पाणि को सी ताल.
राजुला होली राजों की बेटी.
देवी को सी रूप होलु.
सूरज को सी झल्यारो.

(Chataka, 1996, p. xx)[7]

4. जागर की प्रक्रिया:

जागर पूजा या गायन इस क्षेत्र में मनुष्य के अनिष्ट का निवारण करने के लिए उपयोग की जाने वाली प्रचलित लोक विधा है. उपरिवर्णित भी है कि इस विधा के अन्तर्गत देवी-देवताओं का पूजन किया जाता है जिनका आयोजन इनको प्रसन्न करने तथा इनकी रुष्टता दूर करने, दोनों ही परिस्थितियों में किया जाता है. देवी-देवताओं का धन्यवाद करने एवं उनके द्वारा लगे किसी दोष-निवारण हेतु भी जागर आयोजित किए जाते हैं, इन दोनों ही परिस्थितियों में देवी-देवताओं द्वारा अपने लिए पूजा मांगी जाती है. देव-दोष का अभिप्राय होता है किसी व्यक्ति विशेष द्वारा देवी-देवता को प्रसन्न कर किसी व्यक्ति विशेष का अहित करवाना अथवा अहित की कामना करना, ऐसी परिस्थिति में देवी-देवता अधीन होकर इच्छित(पूजा करने वाले) व्यक्ति की बात मानते हैं. जागर द्वारा देवी-देवताओं के प्रसन्न होने पर कामना पूर्ति का वरदान मिलता है तथा सुख-समृद्धि का आशीर्वाद प्राप्त होता है, वहीं अप्रसन्न होने पर 'घात' भी हो सकती है. घात का अर्थ होता है जब कोई व्यक्ति अनायास ही किसी अन्य व्यक्ति को सताता है तो पीड़ित व्यक्ति के हृदय से निकली हुई वेदना जब न्याय की मांग के लिए अपने ईष्ट देवता को याद करती हैं तो वह देवी-देवता पीडित की सहायता करते हैं तथा उसके हित की रक्षा करते हैं, जिससे सताने वाले को कष्ट मिलता है और यही घात कहलाता है. इसी घात का उल्लेख जागर के अन्तर्गत किया जाता है. जिस व्यक्ति के घर में या जिस व्यक्ति पर ये घात लगी होती है उसके घर में देवता अनिष्ट करना शुरू कर देते हैं जैसे घर के प्रभावित व्यक्ति का अनायास रोना शुरू कर देना, घर में किसी की अचानक मृत्यु हो जाना, घर के दरवाजे खिड़की खुद खुल जाना, स्वास्थ्य का शारीरिक अथवा मानसिक रुप से अचानक ही खराब हो जाना इत्यादि विविध अप्रत्याशित घटनाएं घटनी शुरू होने लगती हैं इसको दोष लगना कहते हैं. ऐसी परिस्थिति में व्यक्ति 'उच्याणा' (मन्नत का ही एक रुप) रखता है जिसमें वह सवा सेर चांवल तथा सवा रुपया अलग निकाल के रखता है और सम्बन्धित देवी-देवता को सन्तुष्ट अथवा प्रसन्न करने के उद्देश्य से सब कुछ सही कर देने पर पूजा देने का संकल्प करता है. इससे पीड़ित को थोड़ा आराम मिलता है. इसके पश्चात् पीड़ित बक्या के पास जाकर अपनी व्यथा बताता है (बक्या वह व्यक्ति होता है जो पीडित के चांवल देखकर यहाँ बताता है कि उसके ऊपर किस देवता का दोष है तथा उस पर किसकी घात लगी है) फिर वह बताता है कि अमुक देवता पूजा मांग रहा है और उसी अनुसार पीड़ित का परिवार अच्छा दिन देखकर पूजा देने का निर्णय करता है. इसके लिए वह अपने घर को मिटटी-गोबर से लिपवा कर पूजा-स्थल को गौमूत्र-गंगाजल से स्वच्छ कर आसन बिछा के ढोलीदास (जागरी-हुड़क्या) को बुलाकर आसन ग्रहण करवाता है. इसके बाद नर्तक, पश्वा तथा पीड़ित परिवार के सदस्य तथा दर्शक/श्रोतागण अपना-अपना स्थान ग्रहण कर लेते हैं. इसके बाद जागरी या ढोलीदास जागर गीतों का गायन प्रारम्भ करता है जिसके साथ स्वर मिलाने वाले ढोलेर भी होते हैं. जागरी के गायन प्रारम्भ करने के बाद नर्तक गायन के प्रभाव में आकर नर्तन करना शुरू कर देता है. इस प्रक्रिया में जब किसी व्यक्ति पर देवता का अवतरण होना प्रारम्भ होता है तो वह हिलने(कम्पन करने) लगता है, इस दौरान एक बर्तन में जलते अंगारों में घी डाल कर धुआं किया जाता है तथा नर्तक को उस व्यक्ति की ओर किया जाता है जिस पर देवता का अवतरण हो रहा होता है. इसके पश्चात् नर्तक खुल कर पूरी

दैव्य उर्जा के साथ नृत्य करने लगता है. नृत्य करते हुए वह अपने प्रसन्न व अप्रसन्न होने का कारण बताता है तथा पीड़ित के दोष को दूर करने का वचन देते हुए उपाय बताता है जिससे पीड़ित को शान्ति मिलती है. जागर की यह प्रक्रिया गढवाल में प्रचलन में है तथा विविध समस्याओं के समाधान के लिए आज भी उपयोग में लाई जाती है. जिस प्रकार मनुष्य संगीत की प्रकृति के अनुरूप ही भावाकुल हो नृत्य में मग्न हो जाता है .

5. गढ़वाल में जागर का महत्व:

गढ़वाल में जागर केवल एक लोकगीत का प्रकार या लोक विधा ही नहीं है अपितु ये एक जीवनचर्या है. जिस का विधिवत पालन करके व्यक्ति-विशेष अपने कष्टों को कम करने अथवा से मुक्ति पाने हेतु समाधान प्राप्त करता है. जागर गढ़वाल क्षेत्र की एक संगीतमय पूजा-प्रक्रिया है जिसमें जागर अनुकूल विधियों द्वारा जागर गीतों का गायन ढोल दमाऊं जैसे आदि वाद्यों के साथ किया जाता है. जागर गढ़वाल की संस्कृति का एक अभिन्न अंग हैं यहाँ के लोग जागर पर अत्यन्त विश्वास करते हैं और मानते हैं कि जागर गाने से देवता प्रकट होते हैं और उनके कष्ट का निवारण करने हेतु स्वयं समाधान देते हैं. देवी देवता प्रकट होने के लिए किसी ऐसे मनुष्य का चयन करते हैं जो पवित्र हो जिसे गढ़वाली भाषा में पश्वा कहा जाता है. इसी पश्वा के शरीर में देवी-देवता प्रकट होकर लोगों की समस्याओं का निवारण कर उन्हें आशीर्वाद देते हैं (पश्वाओं को विशेष आदर-सम्मान प्राप्त होता है और वो देवता द्वारा बताए गए नियमों का पालन भी करते हैं). उपरोक्त वर्णित प्रकारों के आधार पर, एक तरफ तो देवी-देवताओं से सम्बन्धित जागर हैं जिसमें देवी-देवता पश्वा के शरीर में आकर नृत्य करते हैं और वहीं दूसरी और भूत-प्रेत सम्बन्धित जागर हैं जिसमें अतृप्त आत्माओं, पितरों का आवाहन किया जाता है (जिनकी अकाल मृत्यु हुई हो अथवा जो अभी भी अपनी अधूरी इच्छाओं के कारण लोक में भटक रही हों और उन्हें मुक्ति का मार्ग साध्य न हो) और ऐसी आत्माएं उन शरीरों का चयन करती हैं जिनसे वे अपनी अतृप्त ईच्छाओं की पूर्ति करवा सकती हैं तथा स्वयं आत्म-मुक्ति पा सकें. ये आत्माएं अपने द्वारा चयनित व्यक्ति को परेशान करती हैं उन्हें अनायास ही ऐसा व्यवहार करने पर बाध्य करती हैं जो कि वह अपनी साधारण अवस्था में नहीं करते, जैसे अनायास ही जोर से रोने लगना या जोर से हँसना, हाथ-पैरों का मुड़ जाना, मुहँ से आवाज न आना, चेहरे का भयानक और अजीब हो जाना इत्यादि. ऐसे लक्षण उस व्यक्ति में देखने को मिलते हैं जिसे अतृप्त आत्माओं द्वारा पीड़ित किया जाता है. इन्हीं सब लक्षणों को देख कर पीड़ित के घर वाले उसका कारण जानने बक्या के पास जाते हैं (बक्या एक प्रकार का पंडित होता है जो अपनी सिद्धियों के कारण ऐसी घटनाओं के होने का कारण जान सकता है) और बक्या उन्हें सलाह देता है कि उस पीड़ित पर अमुक शक्ति का दोष है अथवा किस मृत की आत्मा पीड़ित के ऊपर है. कभी तो छोटी समस्याओं का समाधान बकया के पास ही हो जाता है पर कुछ समस्यायों के लिए बक्या जागर लगाने का सुझाव देते हैं जिसे मंडाण के नाम से जाना जाता है. मंडाण खुले परिसर में बृहत् रूप में होता है वहीं जागर का छोटा रूप घड़ियला के नाम से जाना जाता है जो एक कमरे के अंदर विशिष्ट परिजनों की उपस्थिति में

किया जाता है. जन सामान्य में जागर का इतना महत्व है कि इसका प्रभाव जन-सामान्य के दैनिक व्यवहार में भी प्रत्यक्षतः देखने को मिलता है.

उपरोक्त प्रसंगों के उल्लेख से ज्ञात होता है कि जागर मात्र लोकगीत की विधा नहीं अपितु यहां के जनमानस की समस्याओं के निवारण की एक मुख्य एवं मौलिक प्रक्रिया है और इसी कारण से गढवाल की संस्कृति में अत्यन्त महत्त्व रखती है जो कि किसी अन्य की दृष्टि में हास्यास्पद भी हो सकती है. बहुत पहले से ही इस क्षेत्र के लोग अपनी विविध समस्याओं का निवारण इस जागर प्रक्रिया के माध्यम से करते हुए आ रहे हैं और कर पाए हैं. जागर प्रक्रिया का उल्लेख गढ़वाल के हर गाँव में मिलता है इसका महत्व गढ़वाल के सभी लोग भली भांति जानते हैं लेकिन बढ़ते पलायन के कारण यह विधा अपना अस्तित्व खोती जा रही है और इस पद्धति को आगे बढा़ने वाले लोगों की संख्या बहुत कम होती जा रही है. आधुनिकता के कारण नयी पीढ़ी ऐसी विधाओं पर कम विश्वास करती है तथा इसे अपनाने में संकोच महसूस करती है, जिससे इसका अस्तित्व खतरे में दिखाई पडता है. ऐसे में सभी को चाहिए की इस विधा को सरंक्षित करने के प्रयास करे तथा अपनी लोक धरोहर को बचाने में सहयोग करे क्योंकि यह संस्कृति का अंग है.

निष्कर्ष:

जागर के संदर्भ में दिया उपरोक्त विवरण व प्रसंगों का उल्लेख स्पष्ट करता है कि जागर की गाथाओं का मतलब केवल दुःख निवारण करने की प्रक्रिया नहीं है अपितु स्पष्ट करता है कि इसमें जिन गाथाओं का गान किया जाता है वे गाथाएं एक दिन में नहीं बनीं हैं (यथा जीतू-बगढ़वाल, श्री कृष्ण लीला का वर्णन इत्यादि). इन्हें बनने में बहुत समय लगा है, और इन्हें गेय रूप में परिणित करके जागर की संज्ञा देकर इनके माध्यम से अपनी लौकिक इच्छाओं की पूर्ति के लिए इनका उपयोग करने का कार्य किया जाना एक प्रक्रिया के रुप में धीरे-धीरे विकसित हुआ है. जो सतत और निरंतर चली आ रही है. जागर एक विश्वास का नाम है जो व्यक्ति अपने देवी देवताओं, प्रथाओं, संस्कृति, संस्कारों, परम्पराओं आदि के प्रति दिखता है. और यही विश्वास साकार रूप लेकर उनकी समस्याओं का निराकरण करता है. वहीं जागर ऐसी लोक गाथाओं का संरक्षक भी है जो पूर्व में घटित हो चुकी हैं तथा उन घटनाओं को आज भी जीवित रखे हुये है. डॉ नन्द किशोर ढौंडियाल के अनुसार गढ़वाली जागर लोक गीत बहुत प्राचीन हैं. इनकी निर्मिति उसी समय की मानी जा सकती है जबकि भक्ति का युग था क्योंकि जहाँ समस्त भूत प्राणियों का समदृष्टा जागर गीता के संदेशों से प्रभावित है, वहां विश्व इतिहास की लोक गाथा भी. जागर विश्व की अनेक धार्मिक क्रांतियों को अपने आँचल में समेटे हुए है क्योंकि एक और जहाँ जागर नाथपंथ का खुला पता है, वहां वैष्णव तथा शाक्य मत का संरक्षक भी ¼Dhaundiyal, 2018, p. xx)[8]. संगीत के परिप्रेक्ष्य में अध्ययन करने से विदित होता है कि जागर लोकसंगीत का एक रुप है, जो विशेष ध्वनि-संयोजन का सृजन करता है जिसके फलस्वरुप उर्जा का ऐसा प्रवाह संचरित अथवा निर्मित होता है कि प्रभावितों के शारीरिक व मानसिक विकारों का निर्मूलन हो पाता है, और यह मात्र संस्कृति का द्योतक नहीं अपितु पूर्णतः वैज्ञानिक प्रक्रिया है. संगीत के विशेष सुरों का संयोजन विशिष्ट उर्जा उत्पन्न करने की अद्भुत क्षमता रखता है,

यही जागर द्वारा किया जाता है. गढ़वाल क्षेत्र के किसी भी गांव में इसका प्रत्यक्ष अवलोकन किया जा सकता है (यथा समय-समय पर आयोजित होने वाले देवताओं के आवाहन से सम्बन्धित जागर जो विशिष्ट समय अंतराल पर किए जाते हैं). संगीत (ध्वनि-संयोजन) की इस शक्ति के प्रमाण हेतु अकबर के नवरत्नों में से एक महान संगीतज्ञ तानसेन द्वारा अकबर के अनुग्रह पर दीपक राग गाने की प्रक्रिया का उल्लेख कर सकते हैं, जिसके परिणाम स्वरुप गायन स्थल एवं स्वयं तानसेन जी का शरीर प्रचंड गर्मी से तपने लगा था. प्रचंड गर्मी के प्रभाव से दर्शक व श्रोतागण गायन स्थल से भागने लगे थे जबकि तानसेन जी उसे स्थल पर तडप रहे थे. ऐसी परिस्थिति में उनकी पुत्री सरस्वती द्वारा मेघ राग गाने से वर्षा हुअी तथा तानसेन के जीवन की रक्षा हो पायी. दीपक व मेघ राग के गायन से जो उर्जा उत्पन्न हुई व इसके परिणाम इतिहास में उल्लेखित हैं (हरिश्चन्द्र श्रीवास्तव, 2014)[9]. यह प्रक्रिया पूर्णतः वैज्ञानिक है एवं ध्वनि के सिद्धान्तों पर कार्य करती है तथा यही सिद्धान्त जागर गायन के लिए भी कार्य करता है. अतः यह मात्र सांस्कृतिक ही नहीं अपितु सैद्धान्तिक प्रक्रिया भी है, जिससे इसका महत्व और भी बढ जाता है जिसे नकारा नहीं जा सकता है अथवा मात्र रुढिवादी परम्परा की संज्ञा इसे नहीं दी जा सकती है. किन्तु आज के समय में उत्तराखंड से बढ़ते पलायन के कारण यह जागर गायन की परम्परा संकट में है, नयी पीढ़ी अपने उन स्त्रोतों से दूर हो गयी है जिनसे उन्हें इस विधा का हस्तान्तरण किया जाना है. हस्तान्तरण(सिखाने व सीखने) की यह प्रक्रिया अच्छी समयावधि तथा निरन्तर अभ्यास की मांग करती है. वर्तमान समय में ऐसा नहीं हो पा रहा है और यदि हो रहा है तो वह अपेक्षाकृत कम है, इस वर्तमान परिदृश्य में लोकसंस्कृति के विलुप्त होने के सन्दर्भ में यह निश्चित ही चिन्ता का विषय है.

References:

1. Nanda Jagaron Ki Samajik evam Sanskritik Pristha Bhoomi. (2013). In R. Benjwal (Ed.), *उत्तराखण्ड में नन्दा देवी के उत्सव एवं जात परम्पराः नन्दा राजजात, 2013* (1st ed., p. 133). Binsar Publication.
2. Chātaka, G. (1956). *Garhwali lokgeet* (1st ed.). Jugal kishor and company.
3. Dhaundiyal, N. K. (2018). *garhwali jagar lookgeet tatha prakriya* (1st ed.). Winsar Publication.
4. Chātaka, G. (1996). *Gaṛhavālī loka gāthāeṁ.*
5. Dhaundiyal, N. K. (2018). *garhwali jagar lookgeet tatha prakriya* (1st ed.). Winsar Publication.
6. Dhaundiyal, N. K. (2018). *garhwali jagar lookgeet tatha prakriya* (1st ed.). Winsar Publication.
7. Chātaka, G. (1996). *Gaṛhavālī loka gāthāeṁ.*
8. Dhaundiyal, N. K. (2018). *garhwali jagar lookgeet tatha prakriya* (1st ed.). Winsar Publication.
9. Shrivastava, H. (2014). Rag parichay: Bhag 1. Pp. 103-104. Sangeet Sadan Prakashan, Allahabad, U.P.